लड़की की सबक

"कातु, जल्दी चलो, स्कूल जाने केलिए वक्त गुज़र रहा है।" संजना के बुलाते ही कातु बाहर आती है। "मैं अपना काम बूल चाचा की मीठा लेने गई थी" कातु ने बोला : तो मुझे भी खिलातो - संचना। दोनो खुशी-खुशी स्कूल जाने लगी।

जब वह स्कूल से वापस आ रही थी, तब उसके सामने एक सात साल की लड़की टक्कर मारे गिर गई, बच्ची को चोट लगने के कारण वह रोने लगी। तबी उस बच्ची की पीता वहाँ आकर उसके हाथों मे बच्चे को लेकर उसको चुप कराया। उसे लेकर पीता चला गया पर कातु बहुत उदास हुई और वह ~~संजन~~ संजना को बिना बोले घर चली गई।

'कातू, जल्दी चलो, स्कूल जाने केलिए देर हो रही है!|" संजना के बुलाते ही कातू बाहर आती है। मगर इस बार कातू ~~की~~ के चहरे पर उदासी का मुखौटा पहना था? संजना ने पूछा, क्या हुआ तुम्हे कातू? "जब से तुम उस लड़की को देखकर गई हो, तबसे तुम्हारी यही हाल है।" संजना के यह बातें कातू को अपना पहनावा, उतारने पर मजबूर कर दिया।

कातू बोली, 'तुमने देखा की वह लड़की जब गीरी, तब उसके पीता ने कैसे उसको शांत कराया। मुझे भी तो यह प्यार, इसी देखभाल का हक्कदार हूँ ना। मेरे पिता ने आज तक मुझे देखने नही आए! मेरे पापा आर्मी मे हवलदार थे, में, मेरी माँ बहुत बड़े शहर मे थे।

उनका रोज़ जगड़ा होता था। वह हाथापाई मे कहीं छुपा थे मेरा बचपन की मे आजतक उसे नही ढूँढ पाया। उसी टूटे रिश्ते को संभालते - संभालते, डर-डर के कहीं टूटे मेरा बचपन, तिर को दिल मे लोग प्यार के रूप मे बेचते हैं; मगर उसी तीर मे कहीं ईगो, ज़हर और पत्थर था की मेरा दिल तोडने पर मजबूर था!"

"कातु, कहाँ खो गई, इतने मे तो तुम कैसे खुश बैठ सकती हो?" संजना के सवाल का जवाब कातु ने दिया, जबी मे बच्चों को खेलते दिखती हूँ, तब मे अपना बचपन इनमे खोजती हूँ। उसी कोई कातु भी इन्ही बच्चो मे से मिल जाती।

उसी रास्ते मे मिली लड़की, एक सही घर वालों के, माँ-बाप के प्यार और ताज़ा बचपन की ओर सूचीत करता है।

मे चाहती हूँ की दुनिया की हर बच्ची के यही नीयत हो।

यही सब सुनने के बाद संजना को यह एहसास जाग उठा की अपने परिवार जैसे महत्वपूर्ण कुछ और कोई नही। संजना अक्सर अपने पिता के साथ बिना वजह के झगडा करती है। संजना को आज तक यही लगा की उसके पिता उसके हर काम को टाँग अडाते थे। जो संजना को बिलकुल पसंद नही था। वह अपनी बेटी को सलाह देते थे। यह सब सोचने पर संजना रोकर घर जा रही थी। बाप से माफी मांगने बाद मांगी।

रात का अंदेरा चारों ओर फैलने लगी। हर जगह मे सन्नाटा लोग कम हो रहे थे। चंकातर की रोने-चिल्लाने का आवाज़ चारों ओर गुजने लगा। सड़क मे अकेली हमारी संजना रोकर घर की ओर 'अकेले' जाने लगी। इसी समय घर के बार से माँ-बाप के भरोसे के बहाने वह इज्ज़त उतारने पर तुले स्कूल लड़के बैक पर यहाँ-वहाँ घूमकर संजना को छेडने लगे।

संजना के साथ दुष्कर्म हुआ मगर वह जिन्दा थी। संजना तीस वर्ष की होने पर उसके घर वालों ने रेहान नाम के लड़के साथ रिश्ता करा भी दिया। मगर इस हादसे के बात रेहान के घर वालों ने शादी केलिए मना कर दिया। इस वजह से संजना का घर पूरी तरह से टूट गया।

संजना से मिलने तीस साल की कालू आई। वह अब पुलिस की नौकरी कर रही थी। उसने संजना से सवाल किया मगर उसके घर वालों और समाज की डर के और बदनामी के ताले ने उसकी मुँह से लफ्ज़ निकलने से रोक रही थी।

कालू को बाद में संजना ने सारी सच्चाई बताई उसके बाद कालू ने घुमाई अपने जादू की छड़ी।

संजना के घर वाले उसके घर बसाने के सोच मे चिंतित थे। रेहान के ना ने सबको परेशान कर दिया। मगर वह ना रेहान की नही थी उसके घरवालो की कुशनी सोच की थी।

इसी रिश्ते को संभालने केलिए काजु ने एक खेल रचा। उसकी सह कर्मी प्रिया, नयना, और चीता। वह इसी काम के साहाय करने के लिए है।

रेहान का एक रूम था। वहाँ वो मरीज़ो पर दवाई लिखते और चॅच करते थे। वह एक डॉक्टर था। तो प्रिया को चीता की पत्नी बनाकर बच्चा ना होने की बीमारी बताकर रेहान के पास गया। रेहान के प्रिया को अकेले स्कान के लिए गए तब प्रिया : मुझे जाने दो बोलकर अपने कपडे फाडकर बाहर दूसरे मरीज़ो के सामने तमाशा किया जिससे रेहान का इज्ज़त चली गई

रेहान के बातें के खबर मे रेहान के घरवाले थाने आ गए। काटू के सामने रोने लगे। उनको यह एहसास हुआ की "इज़्ज़त किसी ओर के पास नही बलकि अपने पास है। ऐसी चीज नही है जो इसे इस्तमाल करे तो उसके इज़्ज़त चले।

संजना और रेहन दोनो की अगले हफ्ते शादी है। सबको उसमे आना है, काटू की झंडी की कमाल से एक टूटा रिश्ता और फाड़ा इज़्ज़त दोनो सही सोच के साथ आई। "हमे इनसानो को बदलना नही है, उनके सोच को बदलना है।

रास्ते मे मिली लड़की दो रूप से जाने, एक अपने बचपन का खोज जो काटू को सालो पहले छुपकर बैठी है। उसी बचपन को इसी रास्ते वाली लड़की ढूँढकर देती है।

दूसरी वज़ह यह है की, संजना, कातु की सहेली। यह भी एक उन जानवरो को मिली एक रास्ते मे मिली लड़की थी। इसी लड़की को बेसहारा चित्रित किया है।

सड़क मे, रास्ते मे या जगल मे हो लड़कियाँ या तो किसी बहन, बेटी, माँ मासी, चाची कुछ भी हो सकती है। औरतो को हमारा देश आज़ाद होते हुए भी आज भी इन लड़कों से, समाज के तानों से, आगों की जिन्दगी इन सब के बीच मरोड़ा जा रहा है।
दस मे से सात औरतके साथ गलत होता है मगर उनमे से तो एक ही बाहर आती है।

"औरत या लड़की को मौका नही एक जिम्मेदारी समझना है"

इस लड़कियों की सबक हर मर्दों को और समाज को जरूर याद रखना चाहिए